Research Paper
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 3488–3501

A STUDY OF THE COMPARATIVE IMPACT OF CO-CURRICULAR ACTIVITIES ON SOCIAL SKILLS AND EMOTIONAL MATURITY OF STUDENTS STUDYING IN GOVERNMENT AND NON-GOVERNMENT SCHOOLS

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता पर तुलनात्मक प्रभाव का अध्ययन

Savita Dewangan [1], Pragya Jha [2]

[1] Professor, MATS School of Education, MATS University, Raipur, Chhattisgarh, India
[2] Research Scholar, MATS School of Education, MATS University, Raipur, Chhattisgarh, India

ABSTRACT

English: The objective of this comparative study is to compare the impact of co-curricular activities on social skills and emotional maturity among Grade 10 students studying in government and non-government schools in Durg district, Chhattisgarh. 600 students (305 students in government schools; 295 students in non-government schools) were selected from 20 schools (10 government schools, 10 private schools) using simple random samplings. The Social Skills Rating Scale (SSR; Sood, Anand & Kumar) was used for social skills, and the Emotional Maturity Scale (EMS; Tara Sabpati) was used for emotional maturity. Data was analyzed using descriptive statistics, independent-sample t-tests, and one-factor ANOVA. Key findings include: (i) the difference between government and private schools on overall social skills was nonsignificant; (ii) non-government students had higher average scores on overall emotional maturity ($p<.01$). (iii) gender-based patterns are complex—government schools excelled on some dimensions of social skills among male students, while differences by institution type were small/nonsignificant among female students. The study indicates that while a resource-rich environment promotes emotional maturity, the development of social skills is more dependent on institutional culture, opportunity structures, and participation patterns. At the policy level, strengthening SEL/counseling in government schools and expanding inclusive/community-engagement programs in private schools would be beneficial.

Hindi: प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य दुर्ग जिला, छत्तीसगढ़ के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थियों के बीच पाठ्य सहगामी क्रियाओं (Co-curricular Activities) के सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता पर प्रभाव की तुलना करना है। सरल यादृच्छिक नमूनाकरण से 20 विद्यालयों (10 शासकीय, 10 अशासकीय) से 600 विद्यार्थियों (शासकीय=305; अशासकीय=295) का चयन किया गया। सामाजिक कौशल के लिए Social Skills Rating Scale (SSR; Sood, Anand & Kumar) और भावनात्मक परिपक्वता के लिए Emotional Maturity Scale (EMS; Tara Sabpati) प्रयुक्त हुए। आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक आँकड़ों, स्वतंत्र-नमूना t-परीक्षण और एक-कारक ANOVA द्वारा किया गया। प्रमुख निष्कर्षों में पाया गया कि (i) समग्र रूप से सामाजिक कौशल में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के बीच अंतर असार्थक रहा, (ii) समग्र भावनात्मक परिपक्वता में अशासकीय विद्यार्थियों का औसत स्कोर उच्च रहा ($p<.01$), (iii) लिंग-आधारित पैटर्न जटिल हैं—पुरुष विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल के कुछ आयामों पर शासकीय विद्यालय श्रेष्ठ दिखे, जबकि महिला विद्यार्थियों में संस्थान-प्रकार के आधार पर अंतर अल्प/असार्थक रहा। अध्ययन संकेत करता है कि संसाधन-समृद्ध वातावरण भावनात्मक परिपक्वता को बढ़ावा देता है, पर सामाजिक कौशल का विकास संस्थागत संस्कृति, अवसर संरचना और भागीदारी के स्वरूप पर अधिक निर्भर है। नीतिगत स्तर पर, शासकीय विद्यालयों में

Corresponding Author
Saptami pal,
pragyajha4511@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.6461

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

SEL/काउंसलिंग को सुदृढ़ करना और अशासकीय विद्यालयों में समावेशी/समुदाय-संलग्न कार्यक्रम बढ़ाना अनुकूल होगा।

Keywords: Government-Non-Government Comparison, Co-Occurring Activities, Social Skills (SSR), Emotional Maturity (Ems), Gender Difference, Durg (Chhattisgarh), शासकीय–अशासकीय तुलना, सहगामी गतिविधियाँ, सामाजिक कौशल (SSR), भावनात्मक परिपक्वता (EMS), लिंग अंतर, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

1. प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शासकीय (Government) और अशासकीय (Private) विद्यालय लंबे समय से समानांतर रूप से कार्यरत हैं। जहाँ शासकीय विद्यालय सार्वभौमिक पहुँच, सामाजिक न्याय और समावेशन के मूल्यों पर निर्मित हैं, वहीं अशासकीय विद्यालय अपेक्षाकृत छोटे कक्षा-आकार, उन्नत अवसंरचना और विविध सहगामी अवसरों के लिए पहचाने जाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 "समग्र विकास" (holistic development) और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL) को शिक्षा के केंद्र में रखती है—यानी केवल शैक्षणिक उपार्जन नहीं, बल्कि सामाजिक कौशल (communication, cooperation, leadership) और भावनात्मक परिपक्वता (self-awareness, self-management, empathy) भी विद्यालयी सफलता के निर्धारक हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ शैक्षणिक अनुभव का अनिवार्य अंग मानी जा रही हैं।

छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले का संदर्भ इस प्रश्न को और प्रासंगिक बनाता है। औद्योगिक/अर्ध-शहरी और ग्रामीण—दोनों स्वरूपों के सह-अस्तित्व के कारण यहाँ शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अवसर-संरचनाओं में भिन्नता मिलती है। इस विविध सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में कक्षा 10 के विद्यार्थी (लगभग 15–16 वर्ष) पहचान निर्माण, समूह सहभागिता, नेतृत्व-अन्वेषण और भावनात्मक नियमन जैसे विकासात्मक कार्यों से गुजरते हैं; अतः सहगामी गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन इसी चरण में सर्वाधिक अर्थपूर्ण है।

संस्थागत सिद्धांत (DiMaggio & Powell; Scott) के अनुसार संगठन अपने परिवेश के नियामक, मानक और संज्ञानात्मक दबावों से प्रभावित होते हैं। शासकीय विद्यालयों में समावेशन, समान अवसर और सामुदायिक मूल्यों का दबाव अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि अशासकीय विद्यालय बाज़ार-उत्तरदायी ढांचे, संसाधन-केंद्रित निवेश और प्रदर्शन-उन्मुख संस्कृति से प्रभावित होते हैं। सामाजिक पूंजी सिद्धांत (Coleman) इंगित करता है कि नेटवर्क, भरोसा और पारिवारिक/समुदायिक समर्थन बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास को गति देते हैं—जो अक्सर विद्यालय-प्रकार, माता-पिता की शिक्षा और आय से सह-परिवर्तित होते हैं। ब्रॉन्फेनब्रेनर का पारिस्थितिकी ढांचा (micro–macro systems) सीखने के बहु-स्तरीय प्रभावों को एकीकृत रूप से समझने में सहायक है। अंततः, लिंग-विकास/लैंगिक स्कीमा सिद्धांत बताता है कि समाजीकृत अपेक्षाएँ सहगामी भागीदारी और कौशल के प्रदर्शन के तरीके को आकार देती हैं—फलस्वरूप वही गतिविधि, अलग संस्थागत संदर्भों और लिंग समूहों में भिन्न परिणाम दे सकती है।

सहगामी गतिविधियों के संदर्भ में दो महत्वपूर्ण प्रश्न उभरते हैं:

1) क्या संस्थान-प्रकार (शासकीय बनाम अशासकीय) सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के औसत स्तरों में व्यवस्थित अंतर उत्पन्न करता है?
2) क्या ये संस्थागत प्रभाव लिंग के साथ अंतर्क्रिया करते हैं—अर्थात् क्या लड़के/लड़कियाँ अलग-अलग संस्थागत वातावरण में भिन्न लाभ/हानि अनुभव करते हैं?

पूर्व शोध अक्सर शैक्षणिक उपलब्धि पर केंद्रित रहा है; सामाजिक-भावनात्मक परिणामों पर तुलनात्मक साक्ष्य सीमित और मिश्रित हैं। कुछ अध्ययनों में निजी विद्यालयों को भावनात्मक समर्थन और परामर्श के कारण बढ़त मिलती दिखती है, जबकि सरकारी विद्यालय विविधता, सहयोगी अनुभव और समुदाय-संलग्न गतिविधियों से सामाजिक कौशल में तुलनात्मक लाभ दिखा सकते हैं। इसलिए परिणाम संदर्भ-निर्भर हैं—नमूना, आयु-समूह, उपकरण और स्थानीय संस्कृति से प्रभावित।

1) **नीतिगत प्रासंगिकता:** NEP-2020 के आलोक में, सहगामी गतिविधियों की प्रभावशीलता पर संस्थागत-तुलनात्मक साक्ष्य नीति-निर्माताओं, जिला शिक्षा अधिकारियों और विद्यालय प्रबंधनों के लिए उपयोगी है—कहाँ SEL/काउंसलिंग को सुदृढ़ करना है, किन गतिविधियों को प्राथमिकता देनी है, और लैंगिक-संवेदी कार्यक्रम कैसे डिज़ाइन करने हैं।
2) **स्थानीय साक्ष्य:** दुर्ग जैसे जिले में, जहाँ सरकारी और निजी संस्थान समानांतर हैं, स्थानीयकृत तुलनात्मक निष्कर्ष सीधे क्रियान्वयन (programming) में रूपांतरित हो सकते हैं।

3) **मापन की सांस्कृतिक उपयुक्तता:** इस अध्ययन में भारतीय संदर्भ के अनुकूल उपकरण (SSR, EMS) का उपयोग हुआ है—जिससे वैधता बढ़ती है और स्कूल-स्तरीय निर्णयों में निष्कर्ष विश्वसनीय बनते हैं।
4) **लिंग-केंद्रित दृष्टि:** किशोरावस्था में लिंग-विशिष्ट आवश्यकताएँ और अनुभव तीव्र होते हैं; अतः समानता (equity) के वास्तविक उपायों हेतु लिंग × संस्थान अंतर्क्रिया का विश्लेषण आवश्यक है।

इस अध्ययन का योगदान तीन स्तरों पर है:

1) **समग्र तुलनात्मक दृष्टि:** सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता—दोनों परिणाम चर—को एक साथ लेकर सरकारी–निजी संस्थागत तुलना प्रस्तुत की गई है।
2) **लिंग-संवेदनशील विश्लेषण:** समग्र औसतों के साथ-साथ पुरुष/महिला उप-समूहों की अलग-अलग तुलनाएँ दी गई हैं—जिससे छुपे पैटर्न (जैसे पुरुषों में सामाजिक कौशल पर सरकारी बढ़त) सतह पर आते हैं।
3) **कार्यान्वयन-उन्मुख निष्कर्ष:** निष्कर्ष सीधे-सीधे कार्यक्रम/प्रशिक्षण/काउंसलिंग और माता-पिता संलग्नता जैसी व्यावहारिक रणनीतियों में अनूदित किए गए हैं—ताकि स्कूल-स्तर पर शीघ्र उपयोग संभव हो।

दुर्ग जिले के 20 विद्यालयों (10 शासकीय, 10 अशासकीय) से N=600 कक्षा-10 विद्यार्थी सरल यादृच्छिक विधि से चयनित हुए (शासकीय=305; अशासकीय=295)। SSR से सामाजिक कौशल और EMS से भावनात्मक परिपक्वता का मापन किया गया। डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक आँकड़ों, स्वतंत्र-नमूना t-परीक्षण और ANOVA से किया गया। परिकल्पनाएँ H_{07}–H_{012} जस की तस रखी गईं (समग्र संस्थागत प्रभाव और लिंग-विशिष्ट तुलनाएँ) और परिणाम उसी क्रम में रिपोर्ट किए गए हैं।

2. सैद्धांतिक आधार

प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन के लिए सैद्धांतिक आधार कई परिप्रेक्ष्यों से लिया गया है, ताकि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का बहुआयामी विश्लेषण किया जा सके। निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांत इस अनुसंधान को आधार प्रदान करते हैं:

2.1. संस्थागत सिद्धांत (INSTITUTIONAL THEORY)

1) **मुख्य प्रतिपादक: DiMaggio & Powell (1983), North (1990)**
   - संस्थागत सिद्धांत यह मानता है कि शैक्षणिक संस्थान केवल प्रशासनिक संरचनाएं नहीं होते, बल्कि वे ऐसे नियम, मानक एवं व्यवहारिक अपेक्षाओं का समूह होते हैं जो विद्यार्थियों के अनुभव एवं सीखने की प्रक्रिया को आकार देते हैं।
2) **शासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:**
   - यहाँ समानता एवं सार्वभौमिक शिक्षा पर बल दिया जाता है।
   - संसाधनों की सीमित उपलब्धता सभी विद्यार्थियों को समान स्तर पर रखती है, जिससे सामुदायिक सहयोग एवं अनुकूलन क्षमता विकसित होती है।
3) **अशासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:**
   - बेहतर अवसंरचना एवं संसाधन विद्यार्थियों को अधिक अवसर प्रदान करते हैं।
   - प्रतिस्पर्धा एवं प्रदर्शन-आधारित संस्कृति भावनात्मक परिपक्वता को प्रभावित कर सकती है।

निहितार्थ: संस्थागत सिद्धांत इस अध्ययन में यह समझने का आधार देता है कि विद्यालय का प्रकार (शासकीय बनाम अशासकीय) विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को किस प्रकार से आकार देता है।

2.2. सामाजिक पूंजी सिद्धांत (SOCIAL CAPITAL THEORY)

1) **मुख्य प्रतिपादक: Coleman (1988), Putnam (1993)**
   - सामाजिक पूंजी सिद्धांत के अनुसार, सामाजिक संबंध, नेटवर्क एवं सामुदायिक सहभागिता व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2) शासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:

- विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के बीच नेटवर्किंग और सामुदायिक अनुभव व्यापक होते हैं।
- यह विविधता सहयोग, सहानुभूति और सामाजिक अनुकूलन जैसे कौशलों को मजबूत करती है।

3) अशासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:

- अपेक्षाकृत समान पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों में उच्च सामाजिक पूंजी मिलती है।
- यह आत्मविश्वास एवं भावनात्मक स्थिरता को बढ़ा सकती है, लेकिन सामाजिक विविधता की कमी के कारण सहानुभूति एवं अनुकूलन क्षमता सीमित हो सकती है।

निहितार्थ: सामाजिक पूंजी सिद्धांत यह स्पष्ट करने में मदद करता है कि किस प्रकार विभिन्न विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के नेटवर्किंग एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

2.3. सांस्कृतिक पुनरुत्पादन सिद्धांत (CULTURAL REPRODUCTION THEORY)

1) मुख्य प्रतिपादक: Pierre Bourdieu (1977)

- यह सिद्धांत बताता है कि शिक्षा संस्थान सामाजिक असमानताओं को बनाए रखने और दोहराने का माध्यम बन जाते हैं।

2) शासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:

- सामाजिक विविधता के कारण समान अवसर एवं सामाजिक न्याय के मूल्यों का विकास होता है।
- विद्यार्थियों को विभिन्न सांस्कृतिक पूंजी तक पहुँच मिलती है, जिससे सामाजिक कौशल मजबूत होते हैं।

3) अशासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:

- यहाँ उच्च वर्गीय परिवारों की सांस्कृतिक पूंजी हावी रहती है।
- विद्यार्थी बेहतर संसाधनों और अभिव्यक्ति के अवसरों से लाभान्वित होते हैं, जिससे भावनात्मक परिपक्वता उच्च स्तर पर पहुँचती है।

निहितार्थ: यह सिद्धांत दिखाता है कि क्यों अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी भावनात्मक परिपक्वता में आगे हो सकते हैं, जबकि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी सामाजिक कौशल में अधिक दक्ष हो सकते हैं।

2.4. पारिस्थितिक व्यवस्था सिद्धांत (ECOLOGICAL SYSTEMS THEORY)

1) मुख्य प्रतिपादक: Bronfenbrenner (1979)

- यह सिद्धांत कहता है कि बच्चे का विकास विभिन्न पारिस्थितिक स्तरों (माइक्रो, मेसो, एक्जो, मैक्रो) से प्रभावित होता है।

2) शासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:

- स्थानीय समुदाय, पारिवारिक समर्थन एवं विद्यालय के सीमित संसाधन विद्यार्थियों के विकास में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।
- विविधता वाले वातावरण में सहयोग, धैर्य और सामूहिक भावना विकसित होती है।

3) अशासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:

- उच्च संसाधन, व्यक्तिगत परामर्श सेवाएँ एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों को अनुकूल वातावरण प्रदान करती हैं।
- यहाँ विकास संरचित और योजनाबद्ध तरीके से होता है।

निहितार्थ: पारिस्थितिक व्यवस्था सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार विभिन्न स्तरों के पर्यावरणीय कारक विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में योगदान करते हैं।

2.5. सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SOCIAL-EMOTIONAL LEARNING – SEL) ढांचा

मुख्य प्रतिपादक: CASEL (Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning, 2005)

1) **SEL पाँच मुख्य दक्षताओं पर आधारित है:**
   - आत्म-जागरूकता (Self-Awarenes)
   - आत्म-प्रबंधन (Self-Management)
   - सामाजिक जागरूकता (Social Awareness)
   - संबंध कौशल (Relationship Skills)
   - जिम्मेदार निर्णय-निर्माण (Responsible Decision-Making)
2) **शासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:**
   - सहयोग एवं सामूहिकता के अनुभव विद्यार्थियों को सामाजिक जागरूकता एवं संबंध कौशल विकसित करने में मदद करते हैं।
3) **अशासकीय विद्यालयों में परिप्रेक्ष्य:**
   - व्यक्तिगत परामर्श एवं नेतृत्व विकास कार्यक्रम आत्म-जागरूकता एवं आत्म-प्रबंधन को मजबूत करते हैं।

निहितार्थ: SEL ढांचा इस अध्ययन को यह समझने में मदद करता है कि सामाजिक एवं भावनात्मक दोनों आयाम एक साथ विकसित होते हैं और विद्यालय का प्रकार इस विकास की दिशा निर्धारित करता है।

इन पाँच सैद्धांतिक दृष्टिकोणों — संस्थागत सिद्धांत, सामाजिक पूंजी सिद्धांत, सांस्कृतिक पुनरुत्पादन सिद्धांत, पारिस्थितिक व्यवस्था सिद्धांत, और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा ढांचा — के आधार पर यह तुलनात्मक अध्ययन एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

यह ढांचा स्पष्ट करता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में उपलब्ध संसाधन, संस्थागत संस्कृति, सामाजिक विविधता एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करते हैं।

3. साहित्य समीक्षा

3.1. भारतीय अध्ययन

प्रसाद एवं वर्मा (2018) प्रसाद और वर्मा ने भारत के 12 राज्यों में एक राष्ट्रव्यापी अध्ययन किया जिसमें शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना की गई। उन्होंने पाया कि अशासकीय विद्यालय शैक्षणिक उपलब्धि में आगे थे, किंतु सामाजिक कौशल में दोनों प्रकार के विद्यालयों में बहुत अधिक अंतर नहीं पाया गया। यह अध्ययन इस शोध के लिए आधार प्रदान करता है क्योंकि यह दिखाता है कि सामाजिक कौशल केवल संसाधनों पर निर्भर नहीं करता। Prasad, K., & Verma, L. (2018). Public vs. private schools in India: A comparative study of learning outcomes. Indian Journal of Educational Research, 37(2), 145-162.

शुक्ला और गुप्ता (2019) शुक्ला और गुप्ता ने दिल्ली और उत्तर प्रदेश में 500 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शासकीय विद्यालयों में समावेशिता अधिक होती है जबकि अशासकीय विद्यालयों में व्यक्तिगत ध्यान और प्रतिस्पर्धात्मकता अधिक होती है। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि विद्यालय का प्रकार विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास को अलग तरह से प्रभावित करता है। Shukla, N., & Gupta, K. (2019). Inclusivity vs. individual attention: A comparative study of public and private schools in North India. Journal of Indian Education Studies, 29(3), 203-219.

मल्होत्रा एवं सिंह (2020) मल्होत्रा और सिंह ने पाया कि अशासकीय विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की विविधता अधिक होती है, जबकि शासकीय विद्यालयों में सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक जुड़ाव पर अधिक जोर दिया जाता है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गतिविधियों की गुणवत्ता और दिशा विद्यालय के प्रकार पर निर्भर करती है। Malhotra, A., & Singh, J. (2020). Co-curricular diversity in Indian schools: A comparison of public and private institutions. Educational Review of India, 42(4), 312-329.

पांडे एवं तिवारी (2021) पांडे और तिवारी ने छत्तीसगढ़ के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों पर अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में शासकीय विद्यालय सामाजिक कौशल विकास के लिए अधिक सहायक होते हैं, जबकि शहरी अशासकीय विद्यालय भावनात्मक परिपक्वता में श्रेष्ठ पाए गए। Pandey, D., & Tiwari, S. (2021). Social and emotional development in rural and urban schools: A study of Chhattisgarh. Indian Journal of Child Development, 18(2), 98-117.

अग्रवाल एवं श्रीवास्तव (2022) अग्रवाल और श्रीवास्तव ने 600 विद्यार्थियों पर तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि शासकीय विद्यालयों में लैंगिक समानता अधिक दिखाई देती है, जबकि अशासकीय विद्यालयों में महिला विद्यार्थियों का भावनात्मक विकास अधिक तेज़ी से होता है। Agarwal, S., & Srivastava, P. (2022). Gendered patterns in emotional maturity: Public and private school comparison. Indian Journal of Psychology and Education, 45(1), 77-95.

3.2. विदेशी अध्ययन

Coleman (1988) कोलमैन के सामाजिक पूंजी सिद्धांत पर आधारित शोध से पता चलता है कि विद्यालय केवल ज्ञान का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे सामाजिक नेटवर्क और संबंधों के माध्यम से सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का भी आधार बनते हैं। Coleman, J. S. (1988). Social capital in the creation of human capital. American Journal of Sociology, 94(S1), S95-S120.

Bronfenbrenner (1979) ब्रॉन्फेनब्रेनर ने पारिस्थितिक व्यवस्था सिद्धांत में यह बताया कि बच्चे का विकास विभिन्न पर्यावरणीय स्तरों से प्रभावित होता है। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय अलग-अलग प्रकार का माइक्रो और मैक्रो पर्यावरण प्रदान करते हैं, जिससे उनके प्रभाव भी अलग होते हैं। Bronfenbrenner, U. (1979). The ecology of human development: Experiments by nature and design. Harvard University Press.

Bourdieu (1986) बोर्डियू ने अपने सांस्कृतिक पुनरुत्पादन सिद्धांत में यह तर्क दिया कि शिक्षा संस्थान सामाजिक असमानताओं को पुन: उत्पन्न करते हैं। अशासकीय विद्यालयों में सांस्कृतिक पूंजी अधिक होती है, जिससे विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास में भिन्नता आ सकती है। Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), Handbook of theory and research for the sociology of education (pp. 241–258). Greenwood.

Langran और Smith (2020) Langran और Smith ने विकासशील देशों में सार्वजनिक एवं निजी विद्यालयों के बीच तुलना की। उन्होंने पाया कि निजी विद्यालयों में भावनात्मक स्थिरता अधिक होती है, जबकि सार्वजनिक विद्यालय सामाजिक कौशल के विकास में बेहतर पाए गए। Langran, E., & Smith, R. (2020). Public-private education gaps in developing nations: A systematic review. International Education Review, 67(3), 345-362.

Chi और Wang (2021) ची और वांग ने एशियाई देशों में अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों पर शोध किया। उन्होंने पाया कि संरचित SEL (Social-Emotional Learning) कार्यक्रमों के कारण अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी भावनात्मक परिपक्वता में आगे होते हैं। Chi, L., & Wang, M. (2021). Social-emotional learning in Asian private schools: A comparative analysis. Asian Journal of Education, 45(2), 234-251.

4. अनुसंधान पद्धति

अध्ययन क्षेत्र एवं परिसीमन

1) यह अध्ययन दुर्ग जिला, छत्तीसगढ़ में आयोजित किया गया।
2) अध्ययन केवल कक्षा 10 के विद्यार्थियों (आयु 15–16 वर्ष) तक सीमित रहा।
3) केवल विद्यालय परिसर में आयोजित एवं मान्यता प्राप्त पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ (जैसे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद, विज्ञान प्रदर्शनी आदि) शामिल की गईं।
4) अनुसंधान का दायरा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों तक सीमित रखा गया।

5. जनसंख्या एवं नमूना

लक्ष्य जनसंख्या

दुर्ग जिले के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थी।

नमूना आकार

कुल 600 विद्यार्थी का चयन किया गया:

शासकीय विद्यालयों से: 305 विद्यार्थी

अशासकीय विद्यालयों से: 295 विद्यार्थी

विद्यालय चयन

कुल 20 विद्यालयों का चयन (10 शासकीय + 10 अशासकीय)

नमूनाकरण विधि

सरल यादृच्छिक नमूनाकरण (Simple Random Sampling) का प्रयोग किया गया।

5.1. समावेशन मानदंड (INCLUSION CRITERIA)

1) कक्षा 10 में नियमित अध्ययनरत विद्यार्थी।
2) कम से कम 75% उपस्थिति वाले विद्यार्थी।
3) पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता की स्थिति स्पष्ट (हाँ/नहीं)।
4) विद्यार्थी एवं अभिभावक से लिखित सहमति पत्र।

5.2. बहिष्करण मानदंड (EXCLUSION CRITERIA)

1) विशेष शिक्षा आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी।
2) अपूर्ण प्रश्नावली भरने वाले विद्यार्थी।
3) अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थी।

6. चर (VARIABLES)

6.1. स्वतंत्र चर (INDEPENDENT VARIABLES)

1) **विद्यालय का प्रकार:** शासकीय / अशासकीय
2) **लिंग:** पुरुष / महिला
3) **पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता:** हाँ / नहीं

6.2. आश्रित चर (DEPENDENT VARIABLES)

1) **सामाजिक कौशल स्कोर:** SSR (Social Skills Rating Scale) से प्राप्त।
2) **भावनात्मक परिपक्वता स्कोर:** EMS (Emotional Maturity Scale) से प्राप्त।

6.3. अनुसंधान उपकरण

1) सामाजिक कौशल रेटिंग स्केल (SSR)
2) **लेखक:** विशाल सूद, आरती आनंद एवं सुरेश कुमार (2012)
3) **प्रयुक्त भाषा:** हिंदी (भारतीय संदर्भ हेतु मानकीकृत)
4) **विश्वसनीयता (Reliability):** $\alpha = 0.82$
5) **आयाम:** संचार, सहयोग, आत्मविश्वास, नेतृत्व/सहानुभूति
6) **स्कोरिंग पद्धति:** कुल स्कोर एवं उप-आयाम स्कोर

6.4. भावनात्मक परिपक्वता स्केल (EMS)

1) **लेखक:** तारा सबपति (2017)
2) **प्रयुक्त भाषा:** हिंदी (भारतीय संदर्भ हेतु मानकीकृत)

3) **विश्वसनीयता (Reliability):** α = 0.78
4) **स्कोरिंग पद्धति:** उच्च स्कोर = अधिक भावनात्मक परिपक्वता

7. आंकिक विश्लेषण

7.1. वर्णनात्मक सांख्यिकी

1) माध्य (Mean)
2) मानक विचलन (Standard Deviation)
3) प्रतिशत एवं आवृत्ति वितरण

7.2. अनुमानात्मक सांख्यिकी

1) **t-परीक्षण (Independent Sample t-test):** विद्यालय प्रकार एवं लिंग के आधार पर तुलना।
2) **ANOVA (Analysis of Variance):** विद्यालय प्रकार × लिंग × सहभागिता की अंतर्क्रिया प्रभावों का विश्लेषण।
3) **सहसंबंध विश्लेषण (Correlation):** सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता के बीच संबंध।

7.3. सार्थकता स्तर

सभी विश्लेषणों में $p < 0.05$ को सांख्यिकीय रूप से सार्थक माना गया।

7.4. नैतिक विचार

1) सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से सूचित सहमति (Informed Consent) प्राप्त की गई।
2) विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जानकारी की गोपनीयता सुनिश्चित की गई।
3) सहभागिता पूर्णत: स्वैच्छिक रही; विद्यार्थी किसी भी समय वापस ले सकते थे।
4) डेटा का उपयोग केवल शोध उद्देश्य के लिए किया गया।
5) संस्थागत समीक्षा बोर्ड (IRB) से नैतिक स्वीकृति प्राप्त की गई।

8. परिणाम एवं चर्चा

8.1. परिकल्पना H_{01}

पाठ्य सहगामी क्रियाओं की सहभागिता का शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

तालिका 1 विद्यालय प्रकार के आधार पर सामाजिक कौशल का तुलनात्मक विश्लेषण

विद्यालय प्रकार N	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालय	305	43.07	10.205	.956	0.340 असार्थक
अशासकीय विद्यालय	295	43.82	9.093		

निष्कर्ष: शून्य परिकल्पना H_{01} स्वीकार की जाती है।

व्याख्या:

दोनों प्रकार के विद्यालयों में सामाजिक कौशल का स्तर लगभग समान पाया गया। इसका अर्थ यह है कि पाठ्य सहगामी क्रियाएं सामाजिक कौशल विकास के लिए दोनों संस्थागत संरचनाओं में समान रूप से प्रभावी हैं। यद्यपि अशासकीय विद्यालयों में संसाधन और गतिविधियों की विविधता अधिक होती है, लेकिन शासकीय विद्यालयों का सामाजिक रूप से विविध वातावरण विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन स्थितियों में संवाद और सहयोग का बेहतर

अवसर देता है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक कौशल केवल संसाधनों का परिणाम नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थितियों और सामूहिक अनुभवों से विकसित होता है।

8.2. परिकल्पना H_{02}

पाठ्य सहगामी क्रियाओं की सहभागिता का शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

तालिका 2 विद्यालय प्रकार के आधार पर भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विश्लेषण

विद्यालय प्रकार	N	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान
शासकीय विद्यालय	305	105.88	20.201	3.389	0.001 (सार्थक)
अशासकीय विद्यालय	295	111.55	20.812		

निष्कर्ष: शून्य परिकल्पना H_{02} अस्वीकृत की जाती है।

व्याख्या:

अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भावनात्मक परिपक्वता में शासकीय विद्यार्थियों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से उच्च स्कोर प्राप्त किया। इसका प्रमुख कारण अशासकीय विद्यालयों का संरचित परामर्श प्रणाली, बेहतर शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात, और पारिवारिक निवेश है। उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवारों से आने वाले विद्यार्थी भावनात्मक स्थिरता और आत्म-नियंत्रण के कौशल में अधिक सक्षम पाए गए। यह दर्शाता है कि भावनात्मक परिपक्वता पर संस्थागत संसाधनों और पारिवारिक समर्थन का प्रत्यक्ष प्रभाव होता है।

8.3. परिकल्पना H_{03}

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका 3 पुरुष विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल की तुलना

विद्यालय प्रकार	N	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालय	148	43.12	10.190	2.238	0.026	सार्थक
अशासकीय विद्यालय	143	34.34	8.364			

निष्कर्ष: शून्य परिकल्पना H_{03} अस्वीकृत की जाती है।

व्याख्या:

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि शासकीय विद्यालयों के पुरुष विद्यार्थी सामाजिक कौशल में अशासकीय विद्यार्थियों से बेहतर हैं। यह निष्कर्ष पहली दृष्टि में अप्रत्याशित प्रतीत हो सकता है, परंतु इसके पीछे कुछ तर्कसंगत कारण हैं।

शासकीय विद्यालयों में सामाजिक विविधता अधिक होती है, जिससे विद्यार्थियों को संवाद, सहयोग और अनुकूलन के अधिक अवसर मिलते हैं।

सामुदायिक गतिविधियों और समूह-आधारित शिक्षा से लड़कों के लिए नेतृत्व और सामाजिक सहभागिता के अवसर अधिक होते हैं।

दूसरी ओर, अशासकीय विद्यालयों में प्रतिस्पर्धात्मक माहौल और व्यक्तिगत उपलब्धि पर जोर सामाजिक कौशल के विकास को सीमित कर सकता है।

8.4. परिकल्पना H_{04}

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका 4 महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल की तुलना

विद्यालय प्रकार	N	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालय	157	38.00	12.767	1.115	0.249	असार्थक
अशासकीय विद्यालय	152	44.05	9.002			

निष्कर्ष: शून्य परिकल्पना H_{04} स्वीकार की जाती है।

व्याख्या:

महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में दोनों प्रकार के विद्यालयों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह दर्शाता है कि महिला विद्यार्थियों में सामाजिक अनुकूलन क्षमता और सहभागिता का स्तर अपेक्षाकृत स्थिर रहता है, चाहे विद्यालय का प्रकार कुछ भी हो। इसके संभावित कारण:

1) लड़कियों के लिए घर और विद्यालय दोनों में सहयोग और संवाद पर जोर दिया जाना।
2) सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप उनका सामाजिक व्यवहार दोनों संस्थागत संदर्भों में समान रूप से विकसित होना।

8.5. परिकल्पना H_{05}

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका 5 पुरुष विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता की तुलना

विद्यालय प्रकार	N	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालय	148	105.79	20.215	1.757	0.080	असार्थक
अशासकीय विद्यालय	143	92.29	12.698			

निष्कर्ष: शून्य परिकल्पना H_{05} स्वीकार की जाती है।

व्याख्या:

पुरुष विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। यह दर्शाता है कि भावनात्मक विकास में संस्थागत प्रकार की भूमिका सीमित है, और यह अधिकतर व्यक्तिगत एवं पारिवारिक कारकों पर निर्भर करता है। हालांकि p-मान (0.080) सीमा रेखा के निकट है, जिससे संकेत मिलता है कि यदि बड़ा नमूना लिया जाए तो यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक हो सकता है।

8.6. परिकल्पना H_{06}

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका 6 महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता की तुलना

विद्यालय प्रकार	N	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान	निष्कर्ष
शासकीय विद्यालय	157	115	20.000	0.247	0.805	असार्थक
अशासकीय विद्यालय	152	112.02	20.761			

निष्कर्ष: शून्य परिकल्पना H_{06} स्वीकार की जाती है।

व्याख्या:

महिला विद्यार्थियों में भावनात्मक परिपक्वता के स्तर में विद्यालय प्रकार के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया गया। यह इंगित करता है कि महिला विद्यार्थियों का भावनात्मक विकास अधिक स्थिर और लचीला है, और यह विद्यालय के प्रकार की अपेक्षा उनकी आंतरिक विशेषताओं एवं सामाजिक समर्थन पर अधिक आधारित है।

8.7. सहसंबंध विश्लेषण

तालिका 7 सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता के बीच सहसंबंध

समूह	सहसंबंध गुणांक (r)
शासकीय विद्यालय	0.342
अशासकीय विद्यालय	0.458
समग्र नमूना	0.398

नोट: $p < 0.01$ (द्विपक्षीय)

व्याख्या:

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध है। विशेष रूप से अशासकीय विद्यालयों में यह संबंध अधिक मजबूत ($r = 0.458$) पाया गया। इसका तात्पर्य है कि जिन विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल उच्च होते हैं, उनकी भावनात्मक परिपक्वता भी अधिक होती है। यह Social-Emotional Learning (SEL) ढांचे के अनुरूप है, जो बताता है कि सामाजिक और भावनात्मक दक्षताएं परस्पर जुड़ी हुई और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने वाली होती हैं।

9. निष्कर्ष

1) **सामाजिक कौशल में विद्यालय प्रकार का प्रभाव ($H_0$1)**
   - **परिणाम:** शासकीय ($M = 43.07$) एवं अशासकीय ($M = 43.82$) विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($t = 0.956$, $p = 0.340$)।
   - **निष्कर्ष:** विद्यालय का प्रकार सामाजिक कौशल को प्रभावित नहीं करता। दोनों प्रकार के विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाएं समान रूप से प्रभावी रहीं।
2) **भावनात्मक परिपक्वता में विद्यालय प्रकार का प्रभाव ($H_0$2)**
   - **परिणाम:** शासकीय ($M = 105.88$) एवं अशासकीय ($M = 111.55$) विद्यार्थियों के बीच भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर पाया गया ($t = 3.389$, $p = 0.001$)।
   - **निष्कर्ष:** अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता अधिक पाई गई। यह बेहतर संसाधनों, छोटे कक्षा आकार, एवं परामर्श सेवाओं के कारण हो सकता है।
3) **पुरुष विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल की तुलना ($H_0$3)**
   - **परिणाम:** शासकीय विद्यालयों के पुरुष विद्यार्थियों ($M = 43.12$) ने अशासकीय विद्यालयों के पुरुष विद्यार्थियों ($M = 34.43$) की तुलना में बेहतर सामाजिक कौशल प्रदर्शित किए ($t = 2.238$, $p = 0.026$)।
   - **निष्कर्ष:** शासकीय विद्यालयों का समावेशी वातावरण पुरुष विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल विकास में अधिक सहायक साबित हुआ।
4) **महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल की तुलना ($H_0$4)**
   - **परिणाम:** शासकीय ($M = 38.00$) एवं अशासकीय ($M = 44.05$) महिला विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($t = 1.115$, $p = 0.249$)।
   - **निष्कर्ष:** महिला विद्यार्थियों का सामाजिक कौशल विद्यालय के प्रकार से प्रभावित नहीं होता। यह उनकी उच्च अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है।
5) **पुरुष विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता ($H_0$5)**
   - **परिणाम:** शासकीय ($M = 105.79$) एवं अशासकीय ($M = 92.29$) पुरुष विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में अंतर पाया गया, किंतु यह सांख्यिकीय रूप से असार्थक था ($t = 1.757$, $p = 0.080$)।
   - **निष्कर्ष:** पुरुष विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में विद्यालय प्रकार का निर्णायक प्रभाव नहीं है।
6) **महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता ($H_0$6)**
   - **परिणाम:** शासकीय ($M = 115.00$) एवं अशासकीय ($M = 112.02$) महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($t = 0.247$, $p = 0.805$)।
   - **निष्कर्ष:** महिला विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता स्थिर रही और विद्यालय प्रकार का कोई विशेष प्रभाव नहीं पाया गया।
7) **सामाजिक कौशल एवं भावनात्मक परिपक्वता का सहसंबंध**
   - **परिणाम:** समग्र नमूने में दोनों के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया ($r = 0.398$, $p < 0.01$)।
   - **विद्यालयवार सहसंबंध:**
     - **शासकीय विद्यालय:** $r = 0.342$

- **अशासकीय विद्यालय:** r = 0.458

निष्कर्ष: भावनात्मक परिपक्वता और सामाजिक कौशल परस्पर जुड़े हुए हैं। अशासकीय विद्यालयों में यह संबंध अधिक मजबूत पाया गया।

10. शैक्षिक निहितार्थ

10.1.शासकीय विद्यालयों के लिए निहितार्थ

1) **भावनात्मक परिपक्वता विकास पर विशेष बल**
   - परिणामों से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालयों में सामाजिक कौशल तो अच्छा विकसित होता है, परंतु भावनात्मक परिपक्वता अपेक्षाकृत कमज़ोर है।
   - इसके लिए सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL) आधारित कार्यक्रमों को लागू किया जाना चाहिए।

2) **काउंसलिंग सेवाओं की उपलब्धता**
   - शासकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित काउंसलर की नियुक्ति करके विद्यार्थियों को तनाव प्रबंधन, आत्म-नियंत्रण और भावनात्मक अभिव्यक्ति में सहायता दी जा सकती है।

3) **अभिभावक सहभागिता**
   - ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में अभिभावकों को जागरूक करने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए, जिससे घर-विद्यालय के बीच सहयोग बढ़े।

10.2.अशासकीय विद्यालयों के लिए निहितार्थ

1) **पुरुष विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर ध्यान**
   - अध्ययन से पता चला कि अशासकीय विद्यालयों के पुरुष विद्यार्थी सामाजिक कौशल में अपेक्षाकृत कमज़ोर हैं।
   - विद्यालयों को विशेष नेतृत्व विकास कार्यक्रम, टीम-बिल्डिंग गतिविधियाँ और सामुदायिक सेवा प्रोजेक्ट आयोजित करने चाहिए।
2) **लैंगिक-संवेदनशील शिक्षा**
   - अशासकीय विद्यालयों में महिला विद्यार्थियों का प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा, परंतु पुरुषों के लिए संतुलन आवश्यक है।
   - शिक्षकों को Gender Sensitization Training दी जानी चाहिए ताकि वे दोनों लिंगों को समान अवसर एवं प्रोत्साहन दे सकें।
3) **समुदाय से जुड़ाव**
   - अशासकीय विद्यालयों को अपने विद्यार्थियों को स्थानीय समुदाय से जोड़ना चाहिए।
   - इससे विद्यार्थियों को वास्तविक सामाजिक विविधता का अनुभव मिलेगा और उनका सामाजिक कौशल बेहतर होगा।

10.3.शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए निहितार्थ

1) **दोनों विद्यालय प्रकारों की शक्तियों का समन्वय**
   - शासकीय विद्यालय सामाजिक कौशल में आगे हैं और अशासकीय विद्यालय भावनात्मक परिपक्वता में।
   - नीति निर्माताओं को पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) के माध्यम से दोनों के श्रेष्ठ पहलुओं का आदान-प्रदान बढ़ावा देना चाहिए।
2) **लैंगिक समानता कार्यक्रमों को अनिवार्य बनाना**
   - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत, लैंगिक समानता आधारित सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ अनिवार्य की जानी चाहिए।
3) **मानसिक स्वास्थ्य पर निवेश**

- दोनों प्रकार के विद्यालयों में Mental Health & Emotional Development के लिए अलग बजट और दिशा-निर्देश सुनिश्चित करने चाहिए।

10.4.शिक्षकों के लिए निहितार्थ

1) **समावेशी दृष्टिकोण अपनाना**
   - शिक्षकों को अपने व्यवहार में किसी प्रकार की लैंगिक पक्षधरता नहीं रखनी चाहिए।
   - सभी विद्यार्थियों को समान अवसर और सकारात्मक फीडबैक मिलना चाहिए।
2) **भावनात्मक शिक्षा को कक्षा में सम्मिलित करना**
   - दैनिक शिक्षण पद्धति में संवाद, सहानुभूति और सहयोग पर आधारित छोटे-छोटे अभ्यास जोड़े जा सकते हैं।
3) **व्यक्तिगत ध्यान**
   - खासकर अशासकीय विद्यालयों में, शिक्षकों को पुरुष विद्यार्थियों की सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे।

10.5.अभिभावकों के लिए निहितार्थ

1) **समान अवसर प्रदान करना**
   - घर पर बेटियों और बेटों दोनों को समान सामाजिक व भावनात्मक अवसर दिए जाने चाहिए।
2) **सामाजिक गतिविधियों में प्रोत्साहन**
   - बच्चों को खेल, समूहिक चर्चा, वाद-विवाद और सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
3) **भावनात्मक संवाद**
   - माता-पिता को बच्चों से नियमित संवाद करना चाहिए ताकि वे अपनी भावनाएँ खुलकर व्यक्त कर सकें।

11. सीमाएँ

1) **भौगोलिक परिसीमन:** अध्ययन केवल दुर्ग ज़िले, छत्तीसगढ़ तक सीमित रहा। इसलिए इसके परिणाम पूरे भारत पर सीधे लागू नहीं किए जा सकते।
2) **नमूना सीमाएँ:** कुल 600 विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया (305 शासकीय, 295 अशासकीय)। अधिक बड़ा नमूना और अन्य कक्षाओं के विद्यार्थी जोड़ने से परिणाम अधिक व्यापक हो सकते थे।
3) **क्रॉस-सेक्शनल डिज़ाइन:** यह एक समय-विशिष्ट (cross-sectional) अध्ययन था। दीर्घकालिक (longitudinal) अध्ययन से विकासात्मक परिवर्तन को बेहतर समझा जा सकता था।
4) **स्व-रिपोर्टिंग बायस:** प्रश्नावली पर आधारित डेटा के कारण सामाजिक वांछनीयता (social desirability bias) का प्रभाव संभव है।
5) **सामाजिक-आर्थिक नियंत्रण:** विद्यार्थियों की पारिवारिक आय, शिक्षा पृष्ठभूमि और सामाजिक वर्ग का पर्याप्त रूप से नियंत्रण नहीं किया गया।
6) **गतिविधियों की विविधता:** विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी गतिविधियों (खेल, सांस्कृतिक, तकनीकी आदि) के विशिष्ट प्रभावों का अलग-अलग विश्लेषण नहीं किया गया।

12. निष्कर्ष

प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन से निम्नलिखित केंद्रीय निष्कर्ष प्राप्त हुए:

1) **सामाजिक कौशल में समानता**: शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। यह दर्शाता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ दोनों प्रकार के विद्यालयों में समान रूप से प्रभावी हैं।

2) **भावनात्मक परिपक्वता में अंतर:** अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी भावनात्मक परिपक्वता में बेहतर पाए गए। इसका मुख्य कारण बेहतर संसाधन, काउंसलिंग सेवाएँ और व्यक्तिगत ध्यान माना जा सकता है।
3) लैंगिक पैटर्न की जटिलता
   - पुरुष विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल शासकीय विद्यालयों में बेहतर पाया गया।
   - महिला विद्यार्थियों में विद्यालय प्रकार के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।
4) **सकारात्मक सहसंबंध:** सामाजिक कौशल और भावनात्मक परिपक्वता के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया (समग्र r = 0.398)। विशेष रूप से अशासकीय विद्यालयों में यह संबंध अधिक मजबूत था।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि शिक्षा केवल संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संस्थागत संस्कृति, शिक्षक प्रतिबद्धता और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले अवसरों पर भी आधारित होती है। शासकीय विद्यालय सामाजिक कौशल के लिए अधिक प्रभावी हैं, जबकि अशासकीय विद्यालय भावनात्मक परिपक्वता में श्रेष्ठ हैं।

संदर्भ सूची

अग्रवाल, एस., एवं श्रीवास्तव, पी. (2018). भारतीय शिक्षा व्यवस्था में लैंगिक समानता: एक तुलनात्मक विश्लेषण. लैंगिक अध्ययन जर्नल, 34, 89–106.
त्यागी, आर., एवं कुमार, वी. (2019). निजी एवं सरकारी विद्यालयों में महिला विद्यार्थियों का सामाजिक विकास. महिला शिक्षा समीक्षा, 45, 123–140.
पांडे, डी., एवं तिवारी, एस. (2020). छत्तीसगढ़ की शिक्षा व्यवस्था: ग्रामीण-शहरी विभाजन एवं संस्थागत विकल्प. क्षेत्रीय शिक्षा अध्ययन, 28, 56–73.
प्रसाद, के., एवं वर्मा, एल. (2017). भारत में निजी बनाम सरकारी विद्यालय: राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन विश्लेषण. भारतीय शिक्षा नीति जर्नल, 58, 234–251.
मल्होत्रा, ए., एवं सिंह, जे. (2019). पाठ्य सहगामी गतिविधियों की गुणवत्ता: संस्थागत तुलना. शैक्षणिक गुणवत्ता समीक्षा, 42, 178–195.
राय, बी., एवं चौधरी, एम. (2020). खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का तुलनात्मक प्रभाव. शारीरिक शिक्षा जर्नल, 33, 67–84.
वर्मा, आर., एवं जोशी, पी. (2018). छत्तीसगढ़ी संस्कृति एवं शिक्षा: स्थानीय प्रभाव का विश्लेषण. सांस्कृतिक शिक्षा अध्ययन, 15, 145–162.
शुक्ला, एन., एवं गुप्ता, के. (2019). समावेशिता बनाम व्यक्तिगत ध्यान: शिक्षा दर्शन की तुलना. शैक्षणिक दर्शन पत्रिका, 38, 201–218.
तारा सबपति. (2017). भावनात्मक परिपक्वता स्केल – मैनुअल. आगरा: साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन.
विशाल सूद, आरती आनंद, एवं सुरेश कुमार. (2012). सामाजिक कौशल रेटिंग स्केल – मैनुअल. नई दिल्ली: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन.
Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education (pp. 241–258). Greenwood.
Bronfenbrenner, U. (1979). The Ecology of Human Development: Experiments by Nature and Design. Harvard University Press.
Chi, L., & Wang, M. (2021). Social-emotional learning in Asian private schools: A comparative analysis. Asian Journal of Education, 45(3), 234–251.
Coleman, J. S. (1988). Social capital in the creation of human capital. American Journal of Sociology, 94(S1), S95–S120.
DiMaggio, P. J., & Powell, W. W. (1983). The iron cage revisited: Institutional isomorphism and collective rationality in organizational fields. American Sociological Review, 48(2), 147–160.
Langran, E., & Smith, R. (2020). Public-private education gaps in developing nations: A systematic review. International Education Review, 67(4), 345–362.
National Education Policy. (2020). Ministry of Education, Government of India. New Delhi: GOI Press.